

## दुख-सुख हैं कर्मजन्य

**ह**र मानव जीवन में पल-पल दुख-सुख का अनुभव करता है। दुख और सुख कर्मजन्य हैं। जब तक मानव कर्मों को न सुधारे तब तक दुख से छुटकारा और सुख की प्राप्ति हो नहीं सकती। कइयों की मान्यता होती है कि दुख-सुख परमात्मा ही देते हैं। ऐसा कहने वाले लोग, दुख आने पर उससे छुड़ाने की प्रार्थना भी परमात्मा से करते हैं। वही परमात्मा दुख देने वाला भी और फिर छुड़ाने वाला भी – यह कैसे हो सकता है। भगवान दुखहर्ता हैं, यह तो ठीक है पर भगवान दुखकर्ता – यह कहना तो सरासर अज्ञान है।

### कर और पा

परमात्मा सुखदाता अवश्य हैं परन्तु कर्म के सिद्धान्तों के अनुसार ही सुख देते हैं। लोग उनसे कृपा मांगते हैं, कृपा शब्द का अर्थ है 'कर' और 'पा' अर्थात् कर्म करके ही फल पाया जा सकता है। कई लोगों की मान्यता है कि ज्ञान द्वारा जीवन में सुख की प्राप्ति होती है इसलिए वे ज्ञान लेने का पुरुषार्थ करते हैं परन्तु जब कर्म और आचरण में ज्ञान उतरे और हमारे कर्म सुकर्म बनें तभी सुख मिल सकता है।

### खोटे कर्मों का फल

आजकल छोटी आयु में मृत्यु (अकालमृत्यु) और भयंकर बीमारियों का दौर चल रहा है। यह भी मानव के खोटे कर्मों का ही फल है। हम जानते हैं कि यदि कोई व्यक्ति किसी के प्रति घातक हिंसा का व्यवहार करता है या देशद्रोह आदि करता है तो कानून के अनुसार सरकार उसे मौत का दण्ड देती है। इसी प्रकार रोग, दुर्घटना आदि के द्वारा मानव की जो अकाल मृत्यु होती है वह भी ईश्वरीय सरकार के कानूनों के विरुद्ध आचरण का फल है। यदि मानव इस लोक में श्रेष्ठ कर्म करे और काम-क्रोधादि विकारों के वश होकर विकर्म ना करे तो उसे इस प्रकार का दण्ड नहीं भोगना पड़ेगा।

### कर्म आगे आकर खड़ा हो जाता है

इस संसार में यदि हमने ऐसे कर्म किए हैं जिनसे लोगों के

तन, मन, धन और जन को नुकसान पहुँचा है तो फल रूप हमसे भी ये छिन जाएँगे। छिनने वाले का सब छिन जाता है, लूटने वाले का सब लुट जाता है और मिटाने वाले का अपना भी मिट जाता है। किया हुआ कर्म कभी निष्फल नहीं जाता, अपना फल लेकर सामने आता ज़रूर है। कबीरदास जी ने कहा है,

कबीर करनी अपनी कबहु न निष्फल जाए।

सात समुद्र आड़ा पड़े, मिले अगाऊ आए।।

भावार्थ है कि चाहे सात समुद्र भी कर्म के फल को रोकने की कोशिश करें तो भी वह आगे आकर खड़ा हो जाता है। मानव का सबसे बड़ा साथी उसका कर्म है। वह वस्तु, व्यक्ति से पीछा छुड़ा सकता है पर कर्म से नहीं।

### कुत्सित मनोरंजन

कई बार कोई ट्रेन 10 घण्टे भी लेट हो जाती है। कई तकनीकी कारणों के साथ-साथ कई बार मानवीय कारण भी बन जाते हैं। कई बार कोई नौजवान ट्रेन की चेन खींचकर भाग जाता है। पुलिस पीछे भागती है, वह खेतों में से छिपकर ओझल हो जाता है, ऐसा वह केवल मनोरंजन के लिए करता है। अब देखिए, किसी व्यक्ति के कुत्सित मनोरंजन के कारण ट्रेन कई घण्टे खड़ी रही। उसमें कई बीमार थे जिन्हें त्वरित उपचार की ज़रूरत थी। कई विद्यार्थी थे जिनका परीक्षा-हॉल में प्रवेश होने का समय निकल गया। कई लम्बी यात्रा वाले यात्री थे जिनकी अगली ट्रेन निकल गई। इन सब यात्रियों को जो मुसीबतें झेलनी पड़ीं, सबका भार उस अकेले नौजवान पर आ गया जिसने ऐसा कर्म किया। इन सारे कर्मों का और जीवन भर में किए गए ऐसे और भी कर्मों का इकट्ठा फल जब सामने आएगा तो ये बातें याद थोड़े ही रहेंगी कि मेरे कारण कितने लोगों को क्या-क्या तकलीफें हुई थीं। कहने का अर्थ यही है कि जो कर्म रूपी बीज बोते समय असावधान होता है वह फल सामने आने पर दुख और पश्चाताप का सामना करता है।

### दूसरों का घाटा किया तो झेलना भी पड़ेगा

ऐसे बहुत मनुष्य मिलेंगे जिन पर चारों तरफ से मुसीबतों का पहाड़ टूट पड़ता है। उदाहरण के लिए, एक व्यक्ति के पास पूर्वजों की दी कोई सम्पत्ति भी नहीं है, रोजगार का साधन भी नहीं है, पढ़ा-लिखा भी नहीं है, शरीर को रोग भी है, घर में बच्चे भूखे हैं, बच्चों की माँ रोग में तड़प-तड़प कर शरीर छोड़ चुकी है। कहने का भाव यह है कि तन, मन, धन और जन – चारों में से एक भी सुख की प्राप्ति उसे नहीं है। देखने वाले सोचते हैं, यह ऐसा क्या बीज बोकर आया है जो इसके भाग्य में कहीं भी जमा नहीं है, सर्वत्र घाटा ही घाटा है। अवश्य ही उसने कइयों का कई प्रकार से घाटा किया तो उसे भी कई प्रकार का घाटा झेलना पड़ रहा है जिस प्रकार का हमने ऊपर उदाहरण लिया।

### जमा करें पुण्यों को

पूर्व के कर्मों अनुसार यदि हमें निरोगी तन, खूब धन, अच्छे सम्बन्ध मिल भी गए पर मन आवारागर्दी करता है तो पिछले खाते को खत्म होते देर नहीं लगती। किसी के यहाँ गोदाम में कितना भी अनाज भरा हो, यदि वह और खेती न करे तो गोदाम को खत्म होते देर नहीं लगती। अतः पूर्वजन्म में किए के फल को पाकर इतराएँ नहीं वरन् भविष्य के लिए पुण्य के बीज भी बोएँ। जैसे हम भविष्य में काम आने के लिए धन को जमा करके रखते हैं इसी प्रकार भविष्य में काम आने के लिए पुण्यों को भी जमा करें।

### विकल्प और विकर्म

मनसा, वाचा, कर्मणा – तीनों प्रकार से पाप कर्म होते हैं। किसी भी विकार – काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार, ईर्ष्या, द्वेष, बदले की भावना, नफरत आदि के वशीभूत होकर जो संकल्प चलते हैं उन्हें विकल्प कहा जाता है और इन विकारों के वशीभूत जो कर्म हो जाते हैं उन्हें विकर्म कहते हैं। मान लीजिए, घर में बच्चा उधम मचा रहा है और माँ को क्रोध आता है तो इस क्रोध के विचार को विकल्प कहा जाएगा। पर यदि क्रोधवश वह बच्चे को कटु शब्द बोले या पिटाई कर दे तो उसके इस कर्म को विकर्म कहा जाएगा।

विकार यदि संकल्प तक रहे तो उसे विकल्प कहते हैं। यदि वह वाणी और कर्म में आ जाए तो विकर्म बन जाता है।

### ज्ञान – पेट भरने के लिए या पवित्र बनने के लिए

सत्कर्म करने का आधार है श्रेष्ठ संकल्प। संकल्प श्रेष्ठ बनाने के लिए सदज्ञान, ईश्वरीय ज्ञान चाहिए। वर्तमान समय संसार में जो ज्ञान है वह या तो पेट भरने के लिए काम में लाया जा रहा है या पद, नाम, कीर्ति पाने अर्थ उपयोग में लाया जा रहा है। ज्ञान का प्रयोग विकारों के नाश या पवित्रता की प्राप्ति के लिए तो बहुत कम हो रहा है। पापों से बचने का एकमात्र उपाय यह है कि हम ईश्वरीय ज्ञान का प्रयोग मन को निर्विकार बनाने में करें। प्रतिदिन रात को सोने से पहले अपने से पूछें, आज मैं कितना पवित्र रहा? काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार इन भूतों के पंजों में कितना फंसा? जब ईश्वरीय ज्ञान के आधार पर प्रतिदिन, प्रतिपल आत्ममंथन करेंगे तब विकारों और विकर्मों से बच सकेंगे। जब पापों से बचेंगे तो पापकर्मों के फल से भी बचेंगे और सदा सुखी रह सकेंगे।

### दुखोत्पादक कर्मों का त्याग करें

कई लोग कहते हैं, दुख को दुख मानो ही मत। परन्तु यह कोई सिद्धि नहीं है। जीवन में रोग, अकालमृत्यु, गरीबी, कलह-क्लेश आएँ और हम मानें ही नहीं, यह भला कैसे हो सकता है। दुख की परिस्थितियाँ होंगी तो मन को हिलाएंगी भी। हमें यह सीखना है कि दुख का सामना ज्ञानपूर्वक करें। जिन कर्मों के परिणामरूप दुख उत्पन्न होता है उन कर्मों को बदल दें, त्याग दें। सुख-दुख में सम अवस्था बनी रहने का गहरा अर्थ है। जब हम आध्यात्मिक मार्ग में आगे बढ़ते हैं तो बुराइयाँ हमारा रास्ता रोकेंगी, हमारी शत्रु बनेंगी। उस समय हम उन रुकावटों को, दुखों को दुख ना मानकर आगे बढ़ते रहें। इस मार्ग पर चलने पर कोई हमारी महिमा भी करेगा, उस महिमा को हम स्वीकार न करें। इस प्रकार दुख-सुख दोनों के प्रति साक्षी रह आगे बढ़ते रहें, इसे कहते हैं मन की सम अवस्था।

➤ ब.कु. आत्म प्रकाश